इतिहास वभाग, ववेकानंद महा वद्यालय द्वारा आयोजित

डॉ. अलका रानी संस्मरण व्याख्यान (2016)

वषय: इतिहास की व्याख्याओं में सांस्कृतिक पहलुओं का महत्त्व:
यूरोप के इतिहास से कुछ उदाहरण

वक्ता: डॉ. देवेश वजय

(सह-आचार्य, ज़ा कर हुसैन दिल्ली कॉलेज)

04 अक्टूबर, **2016**

प्रथम औद्यो गक क्रांति का उत्सव
क्रस्टल पैलेस प्रदर्शनी, लंदन, 1851

फ्रांस में निरंकुशवाद का अंत, 1791

इतिहास की व्याख्याओं में सांस्कृतिक पहलुओं का महत्त्व: वचारणीय बिन्दु

1. समाजिक / ऐतिहा सक 'व्याख्या' का अर्थ
2. व्याख्या में ज़रूरी सामाजिक आयामों की पहचान
3. संस्कृति के व भन्न आयाम.
4. मान सकताओं को परखने की मुश्किलें
5. यूरोप की सांस्कृतिक पहचान
6. यूरोपीय समाज की गतिशीलता
7. यूरोप की गतिशीलता से उसकी सांस्कृतिक व शष्टों का संबंध
8. हमारे प्रजातांत्रिक प्रयोग के लए कुछ सबक

रूस में पुगाचेव का सामंतों के खलाफ वद्रोह ; इंग्लैंड में वश्व का पहला नागरिक अ धकार क़ानून बना

वषय सार

इतिहास अतीत का पर्याय नहीं है; व शष्ठ घटनाओं और परिवर्तन के क्रम को समझने का प्रयास है.

ऐसी घटनाओं की व्याख्याओं के प्रति कौतूहल स्वाभा वक है.

परंतु इतिहासकारों की व्याख्याओं में मतभेद आम व्याख्या का अर्थ है: असंख्य घटनाओं के पीछे प्रवृ त्तयां पहचानना और बुनियादी संरचनाओं से उनके संबंध स्पष्ट करना.

समाजशास्त्री चार प्रमुख संरचनाओं को अक्सर रेखां कत करते हैं. परंतु, इन चारों संरचनाओं के भी कई आयाम स्मरण रखना जरुरी है.

परंपरागत इतिहास लेखन में राजनीति को ही प्रमुख करक ही माना गया; मार्क्सवादियों ने उत्पादन पद्धति और वर्ग संघर्ष को निर्णायक माना; अनालस की परम्परा ने मान सकताओं की अह मयत रेखां कत की.

कार्ल मार्क्स

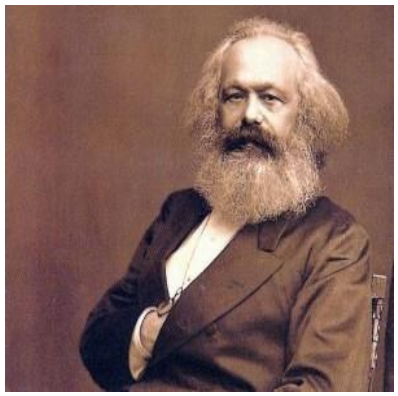

आर्नल्ड टोयन्बी

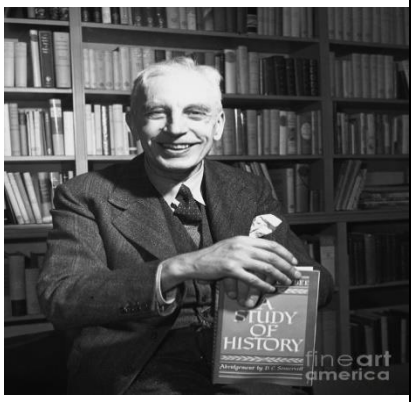

मार्क ब्लॉक

मशेल फूको

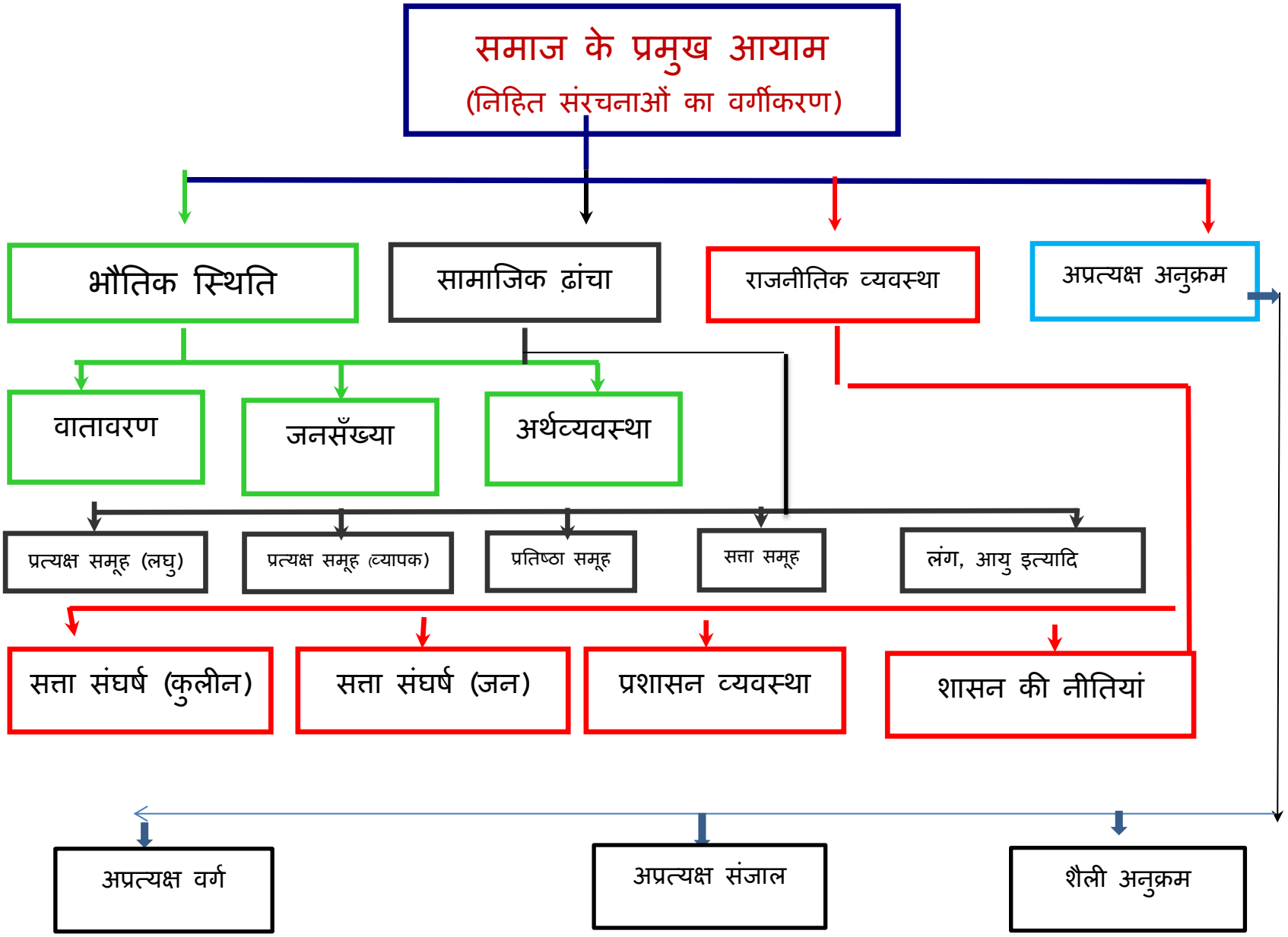
समाज के प्रमुख आयाम
(निहित संरचनाओं का वर्गीकरण)
भौतिक स्थिति
सामाजिक ढ़ांचा
राजनीतिक व्यवस्था
अप्रत्यक्ष अनुक्रम
वातावरण
जनसँख्या
अर्थव्यवस्था
प्रत्यक्ष समूह (लघु)
प्रत्यक्ष समूह (व्यापक)
प्रतिष्ठा समूह
सत्ता समूह
लंग, आयु इत्यादि
सत्ता संघर्ष (कुलीन)
सत्ता संघर्ष (जन)
प्रशासन व्यवस्था
शासन की नीतियां
अप्रत्यक्ष वर्ग
अप्रत्यक्ष संजाल
शैली अनुक्रम

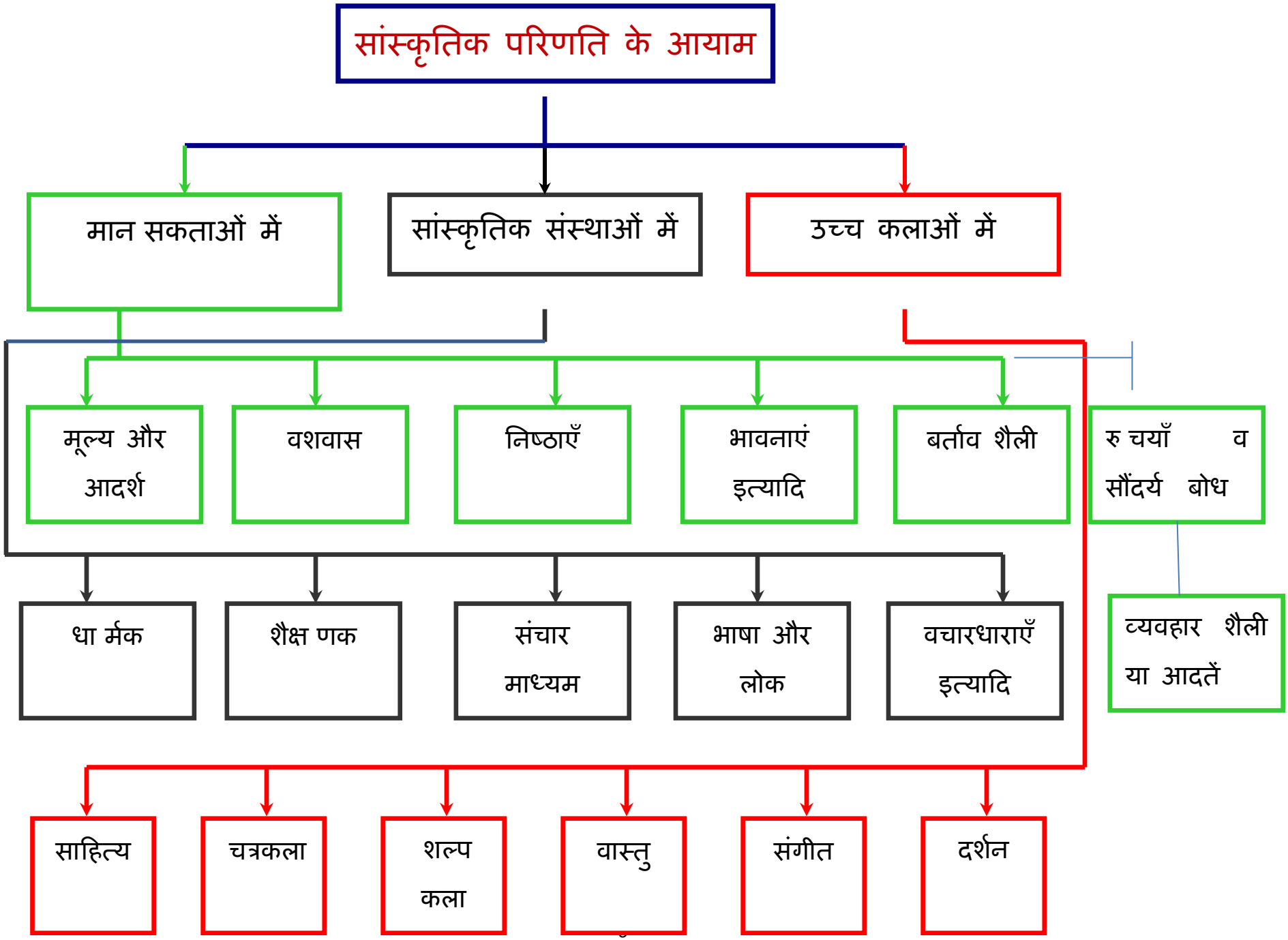
सांस्कृतिक परिणति के आयाम
मान सकताओं में
सांस्कृतिक संस्थाओं में
उच्च कलाओं में
मूल्य और आदर्श
वशवास
निष्ठाएँ
भावनाएं इत्यादि
बर्ताव शैली
रु चयाँ व सौंदर्य बोध
व्यवहार शैली या आदतें
धा र्मक
शैक्ष णक
संचार माध्यम
भाषा और लोक
वचारधाराएँ इत्यादि
साहित्य
चत्रकला
शल्प कला
वास्तु
संगीत
दर्शन

मान सकताओं का आंकलन सरल नहीं है:-

मान सकताएं न प्रत्यक्ष होती हैं न परिमेय (measurable).

अपने ही मन को जानना सरल नहीं, औरों के समूहों की सांझी सोच का ज्ञान तो प्राय: असंभव प्रतीत होगा.

हर व्यक्ति अद् वतीय है; एक साथ कई समूहों का सदस्य होता है; उसकी निष्ठाओं में बदलाव भी आता है.

अत्तीत के समूहों की मान सकताओं का अनुरेखन और भी दुराग्रही बन जाता है.

व्यक्ति की अनेक पहचानें

भिन्न परिवेशों का दो भाइयों पर वरोधी

समुदायों के बर्ताव पर सांझी सोच का असर स्पष्ट नज़र आता है:-

जैसे, पठानों और त मल ब्राह्मणों में शौर्य तथा बौद् धकता के वपरीत आदर्श स्पष्ट दिखते हैं.

जर्मन तथा स्पेनिश श्र मकों में कर्मठता और अनुशासन के स्तर भी काफ़ी भन्न हैं.

सदस्यों पर समूहों की ऐसी छाप समुदायों से मान पाने की चाह पर आधारित है.

बाल-अवस्था में वशेषकर यह प्रभावी होती है.

इसी लए, कष्ट सहकर भी व्यक्ति सांस्कृतिक निर्देशों का अनुसरण करता है.

गर्मी में भी अरब महिलाएं बुर्के को अपनाती हैं

ठंडे तापमान में भी पश्चिमी महिलाएं देह पूरी नहीं ढकती

सामूहिक सोच के अनुरेखन की व ध:-

निजी व सामूहिक कृत्यों में मान सकताओं की झलक महसूस की जा सकती है.

कृत्यों का गहन ववरण **(thick description)** और अर्थानुमान **(interpretation)** मान सकताओं की समझ का माध्यम स्वीकारा गया है.

अंतर-सांस्कृतिक तुलनाएं भी आंकलन में सहायक होती हैं.

मान सकताओं की समझ अक्सर जड़-प्रतीकों (जैसे धा र्मक ग्रंथों, कथाओं, कलात्मक कृतियों, कर्म-कांडों, या रीति-रिवाजों) में तलाशी जाती है. पर यह व ध कृत्यों की अपेक्षा कम उपयोगी है.

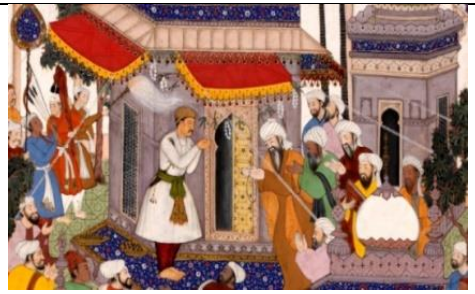

पुत्र प्राप्ति के लए अकबर नंगे पैर दरगाह गए: उस दौर के अनेकों वश्वास इस कृत्य में ढूंढे जा सकते हैं.

हेनरी अष्टम को दूसरे ववाह के लए क़ानून बदलवाने पड़े; पूर्व के बादशाहों की तुलना में, इंग्लैंड का शासक क़ानून से कतना बंधा था यह इस घटना में प्रतिबिंबित होता है.

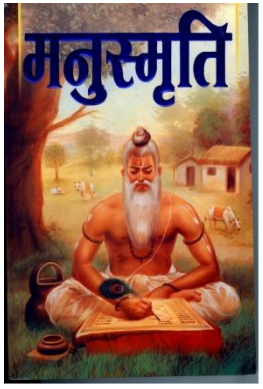

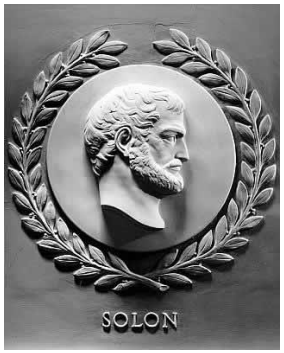

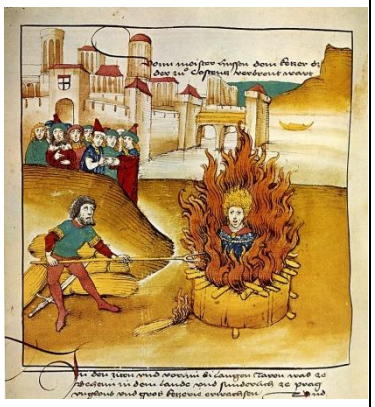

अस्पृश्यता जैसे ज़ा लम रिवाज़ के खलाफ़ भी हिंदुस्तान के हजारों साल के इतिहास में कोई बड़ा वद्रोह नहीं हुआ. जब क, यूरोप में प्राचीन समय से ही, दास प्रथा और कृ ष-दास प्रथा के खलाफ़ व्यापक वद्रोह होते रहे.

यूरोप की सांस्कृतिक एकता पर व भन्न मत:-

महात्मा गांधी, एडवर्ड सईद इत्यादि के अनुसार यूरोप की सांस्कृतिक समरूपता कल्पना मात्र है.

मैक्स वेबर, ब्रौदेल, हंटिंग्टन तथा लन हंट इत्यादि के अनुसार, भाषा इत्यादि के अंतरों के बावजूद, ग्रीक दर्शन, रोमन क़ानून तथा ईसाई धर्म इत्यादि की छाप यूरोप को सांस्कृतिक एकता प्रदान कर पाए.

उच्च संस्कृति में, पुनर्जागरण, वैज्ञानिक क्रांति इत्यादि की गूंज मे ड्रड से लेकर पीटर्सबर्ग तक पहुंची परंतु, भूमध्य सागर और यूराल को पार नहीं कर पाई.

लोक संस्कृति के स्तर पर भी, पर्वों, कथाओं, तथा ववाह आदि की पद्धतियों में व्यापक समानताएं पूरे यूरोप में दिखती हैं.

पर इन समानताओं के बावजूद क्षेत्रीय अंतर नकारे नहीं जा सकते; जैसे उत्तर पश्चिम और द क्षण पूर्व में.

उच्च एवं लोक संस्कृति में मौज़ूद अ खल यूरोपीय बिंब

सांस्कृतिक एकता के साथ, क्या यूरोप में व शष्ट गतिशीलता भी रही ?

कार्ल मार्क्स तथा मैक्स वेबर के अनुसार यूरोपीय समाज में गतिशीलता के व शष्ट स्त्रोत आधुनिक काल से पूर्व भी मौजूद थे.

टोयन्बी, क्रस बेली तथा संजय सुब्रमन्यम के अनुसार, अट्ठारवीं शताब्दी तक भारत व चीन भी यूरोप के समक्ष थे.

पुनर्जागरण के पश्चात यूरोप का राजनीतिक चंतन, वज्ञान और प्रोद्यो गकी निश्चय ही अग्रणी हो गए.

पर, इससे पहले भी, बादशाहों पर कानूनों व् सभाओं का अंकुश, जनता के सामंत और चर्च वरोधी आंदोलन, शहरों की सी मत स्वायत्तता, क़ानून और अदालतों की कार्यवाही, पूँजी का कमोबेश संरक्षण पूर्व आधुनिक यूरोप की व शष्टता भी रेखां कत करते हैं.

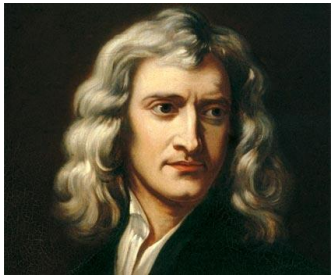

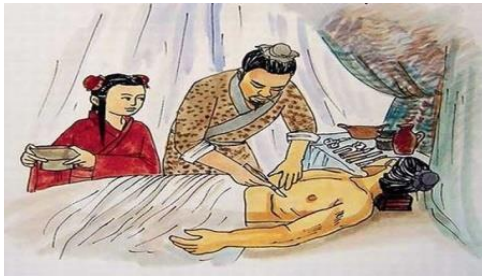

अग्रणी होते हुए भी चीन का वज्ञान न्यूटन जैसे वलक्षण प्रतिभाओं से बहुत पीछे रह गया था.

राजनीतिक चंतन के क्षेत्र में नागरिक अ धकारों की प्रस्तावना देने वाले लौक जैसे यूरोप के वचारक पूर्व के अबुल फ़ज़ल इत्यादि से कहीं अ धक आधुनिक नज़र आते हैं.

यूरोपीय गतिशीलता की व्याख्याएं:

कुछ भ्रामक दलीलें: यूरोप का वकास आधुनिक वज्ञान, पुनर्जागरण, शक्षा के प्रसार इत्यादि के कारण हुआ (ये सभी यूरोपीय वकास के चन्ह और प्रमाण हैं, कारक नहीं)

बेहतर नस्ल, भूगोल एवं वातावरण तथा औपनिवे शक लूट पर जोर भी कारणों की पहचान के लए तुलनाओं का समु चत प्रयोग नहीं करता.

यूरोप की राजनीतिक तथा सामाजिक व शष्टता गतिशीलता की व्याख्या में अ धक सहायक है.

हालां क मार्क्स की ए शयाई निरंकुश तंत्र की अवधारणा अनु चत थी परंतु, यूरोप में क़ानून की प्र क्रया तथा पूंजी का संरक्षण महत्वपूर्ण थे; युद्धों के बीच कूटनीतिक समझोतों का वस्तार भी अहम् थे.

मार्क्स की यूरोपीय सामंती उत्पादन पद्धति की प्रस्तावना पूरी तरह मान्य नहीं परंतु, यूरोप के कृषक एवं कारीगरों के वद्रोह तथा शहरी समाज के अ धकार व गणतंत्रों की परंपरा व शष्ट थे.

यूरोपीय राजनीति में निरंकुश शासन पर अंकुश के दो उदाहरण

मैग्ना कार्टा १२१५ की संवैधानिक क्रान्ति

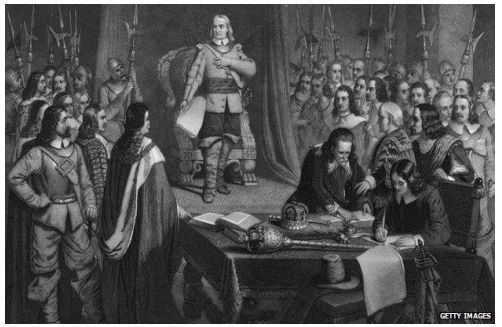

चार्ल्स प्रथम को मृत्यु दंड.

फ्रांस में सामंती दुर्गों पर कृषकों का कब्ज़ा

नीदरलैंड में व्यापारियों का वर्चस्व

आधुनिक यूरोप की गतिशीलता के सामाजिक कारक:-

वर्ग संघर्षों से अ धक यूरोपीय समाज के सूक्ष्म संबंध भी इस क्षेत्र की गतिशीलता के निर्णायक कारक बने.

मैक्फर्लैन के अनुसार, ब्रिटेन में, ववाह व परिवार का स्वरूप मध्यकाल से ही आधुनिक प्रतीत होता है. देर से ववाह, प्रणय को समाज की स्वीकृति, युगलों की सहमति, आत्मनिर्भरता, स्वतंत्र आवाज़, परिवार नियोजन, ववाह न करने वाले पुरुषों व महिलाओं की भी अच्छी तादात, एकल परिवार, पूंजीवादी वकास में सहायक बने.

व्यक्ति पर सजातीय ववाह तथा नातेदारों का बेहद सी मत प्रभाव भी यूरोप के सामाजिक ताने बाने को व शष्ट बना पाया

देर से ववाह, सी मत परिवार, प्रणय **(courtship)** को स्वीकृती व एकाकी पलों का रूमानी बोध यूरोपीय संस्कृति के उत्प्रेरक **(catalytic)** पहलू माने जा सकते है.

यूरोपीय मान सकताओं के व शष्ट पहलू:-

मूल्य / आदर्श: इसी जीवन की खु शयों को सैद्धांतिक प्रधानता देने वाली मानववादी सोच; मुनियों के साथ वैज्ञानिकों और कलाकारों का भी व शष्ट सम्मान.

व्यक्तिवाद अर्थात निजी निर्णयों में सामूहिक हस्तक्षेप पर अंकुश तथा व्यक्ति की गरिमा का सम्मान (साष्टांग व चरण स्पर्श के स्थान पर सीने पर सलीब सजाने की प्रथा अ भवादन में बराबरी की गूंज)

फास्ती आचार-इसी दुनिया में आत्मबोध तथा सामाजिक न्याय की तलाश करना.

वशेष रू चयां तथा शौक: आखेट तथा रंगरे लयों के साथ वज्ञान और प्रोद्यो गकी में कुलीनों की ख़ासी रू च तथा लखने की प्रचुर परम्परा; आम लोगों में भी साक्षर होने तथा राजनीतिक स क्रयता रखने की प्रवृ त्त तथा वद्रोह क्षमता.

वश्वास तथा समझ: धर्मान्धता, अंध वश्वासों और डायन अ भयोग के साथ साथ तर्कवाद की व शष्ट अ भव्यक्ति, यूरोपीय दर्शन के अतिरिक्त प्रोद्यो गकी का तीव्र प्रसार और फलस्वरूप वन्यजीवन का प्राय: सारे यूरोप में मध्यकाल से वलोप; परिवार नियोजन का प्रचलन.

यूरोप के कुलीनों में लेखन व वज्ञान के प्रति रू च

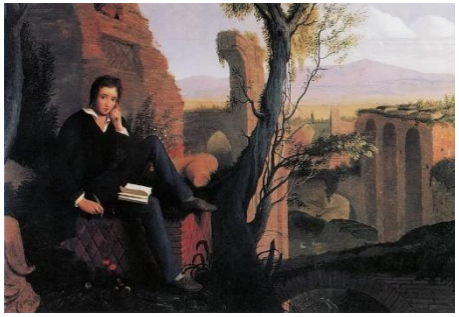

इबादत में भी व्यक्ति की गरिमा का एहसास

भ्रष्टाचार के खलाफ संघर्ष

यूरोप की सांस्कृतिक प्रवृत्तयों का आधार क्या रहा?

इसका जवाब सरल नहीं पर एतिहासक संयोगों के अतिरिक्त भोतिक परिस्थितियों का योगदान प्रत्यक्ष. जैसे:-

यूरोप में खेती मानसून जैसे अनिश्चित कारकों पर निर्भर नहीं.

प्लेग तथा चेचक इत्यादि का प्रकोप परंतु, मलेरिया, इत्यादि उष्ण कटिबंधीय बीमारियों से बचाव.

भारत, मस्र, ईरान इत्यादी के वपरीत यूरोप आक्रमों को रोकने में १००० ई के बाद अधक सफल रहा. (तूर की लड़ाई ७६५ के बाद (दक्षण पश्चिमी यूरोप को छोड़ कर).

कृष की उर्वरता कम होने के कारण सीमत परिवार की प्रथा.

भारत के भीषण अकालों में मरने वालों की संख्या करोड़ों में थी; यूरोप में मध्यकाल से ही, शकार पर आधारित वन्य जीवन समट चुका था .

सामाजिक वकास के लए समर्पत संस्थायों का निर्माण यूरोप के सार्वजनिक जीवन की वशष्ट खूबी रही है

कुछ सबक:-

वैश्वीकरण के दौर में, मूल्यों और रू चयों का चुनाव नई संभावनाएं प्रस्तुत करता है.

सरल और मादक वकल्पों को चुनने की प्रवृ त्त आम होना संभव है.

जैसे, पश्चिमी फैशन और खर्चीली जीवन शैली का आकर्षण.

दूसरी ओर, कर्मठता और न्याय के लए संघर्ष अपनाणा अ धक चुनौती भरा है.

पश्चिम की कुछ लुभावनी और चुनौतीपूर्ण जीवन-शै लयाँ.

फ्लोरेंस नाईतिंगैल: लेडी वथ द लैंप ; फैशन पश्चिम की राष्ट्रीय आय का बढ़ा हिस्सा बन चुका है.

Readings

Lynd and Lynd, Knowledge for What ?

Peter Burke, History and Social Theory, CUP, 1992.

Georges Duby, Trends in Historical Research in France, in Duby's Love and Marriage in Medieval Europe, Polity, 1994.

Lynn Hunt ed. New Cultural History, CUP.

E.P. Thompson, Folklore, Anthropology, And Social History, Indian Historical Review, 1977, Vol. III No. 2. pp. 247-266.

Sumit Sarkar, The Relevance of E.P. Thompson' in Sarkar, The Writing of Social History, 1997.

Richard Evans, In Defense of History, 1977.

Michael Bentley ed. Companion to Historiography, Routlege, 1997.

G. Elton, The Pursuit of History.

Arthur Marwick, The Nature of History, 1989. 3 ed.

John H. Arnold, History: A Very Short Introduction, OUP, 2000.

Marc Bloch, The Historian's Craft, Vintage, 1953.

Lucien Febvre, Sensibility and History, in Aymard and Mukhia ed

French Studies in History, 1988. Louis Gottschalk, Generalization in the Writing of History, Univ. of Chicago Press, 1963. W.H Dray, Laws and Explanations in History, 1970. Patrick Gardiner, The Nature of Historical Explanation, 1961. Issiah Berlin, Concepts and Categories, 1980. E.Sosa ed Causation and Conditionals, 1975. Andre Beteille, Observations on the Comparative Method, EPW, 1990. J.S. Mill, A System of Logic. Entries on Modernity and Modernisation in N.J. Smelser and P.B. Baltes, International Encyclopedia of the Social and Behavioral Sciences Elsevier, Amsterdam etc, 2001. pp. 9939-9970. Entry on Causation in Inter Ency of Social Sciences, 1966. Dipesh Chakrabarty, Provincialising Europe Lucien Goldman, On Human Sciences	